विचार बिन्दु

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुःखी होता है। –अज्ञात

डिजिटल डिवाइड: भारत के संदर्भ में

कभी यह कहा जाता था कि पूरी दुनिया के लोगों को दो समूहों में बांटा जा सकता है – हैव्स और हैवनॉट्स। अर्थात वे जिनके पास सब कुछ या काफी कुछ है और जिनके पास कुछ भी नहीं है। यह भी कहा जा सकता है कि एक समूह अमीरों का है और दूसरा ग़रीबों का। दुनिया में अमीरी और ग़रीबी अब भी बरक़रार है। हमारा देश भी इस स्थिति का अपवाद नहीं है। लोग यह भी कहते हैं कि इधर अमीर और अमीर हुए हैं तथा ग़रीब और ग़रीब। कुछ की संपदा बहुत तेज़ गति से बढ़ी है तथा कुछ दो वक़्त की रोटी के भी मोहताज़ हो गए हैं। इस स्थिति का दोष पूंजीवाद को दिया जाता है। इस पूरी चर्चा का सन्दर्भ अर्थ अर्थात धन है। लेकिन इधर धन के अलावा एक और संदर्भ में दुनिया को दो हिस्सों में बांटकर देखा जाने लगा है और जो रेखा दुनिया को दो हिस्सों में बांटती है उसे डिजिटल डिवाइड कहा जाता है। हिंदी में इसे डिजिटल विभाजन कहा जा सकता है, लेकिन बात पूरी तरह बनती नहीं है इसलिए हम अपनी चर्चा में डिजिटल डिवाइड अभिव्यक्ति का ही प्रयोग करेंगे।

ऐसा कहा और माना जाता है कि सूचना प्रौद्योगिकी का विकास आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है। सूचना प्रौद्योगिकी एक व्यापक अभिव्यक्ति है जिसमें कंप्यूटर, नेटवर्किंग, सॉफ्ट्वेयर, डेटा प्रबंधन और इंटरनेट जैसी तकनीकों और सामग्री का उपयोग सूचना के निर्माण, उसके संठाहण, प्रसारण और प्रसंस्करण के लिए किया जाता है। दुनिया में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी की शुरुआत 1940 के दशक में हुई, लेकिन तब के कंप्यूटर बहुत बड़े वैक्यूम ट्ययूब आधारित और महंगे थे तथा उनका प्रयोग भी वैज्ञानिक और सैनिक गणनाओं तक सीमित था। यह दौर 1960 तक चला। 1960 से 1980 का कालखंडमेनफ्रेम और मिनी कंप्यूटर युग के नाम से जाना जाता है और इस कालखंड में ट्रांज़िस्टर और एकीकृत सर्किट ने कंप्यूटर को छोटा, तेज़ और किफायती बना दिया। बड़े कामों के लिए मेनफ्रेमकंप्यूटर और छोटे व निजी कामों के लिए मिनी कंप्यूटर चलन में आए। सॉफ्टवेयर का विकास होने लगा, प्रोग्रामिंग भाषाएं विकसित होने लगीं और नेटवर्किंग की शुरुआत हुई। इसके बाद के अर्थात 80 से 90 के दस साल पर्सनल कंप्यूटर युग के नाम से जाने जाते हैं। इसी कालखंड में सॉफ्टवेयर क्रांति हुई और 1980 से इंटरनेट का उपयोग भी बढ़ने लगा। इसके बाद के अर्थात 1990 से 2000 के बीच के दस साल इंटरनेट और डिजिटल युग कहे जाते हैं। 1991 में टिमबर्नर्स ली ने की शुरुआत करके इंटरनेटको आम जन के लिए सुलभ बना दिया। ई-कॉमर्स और डिजिटल सेवाएं लोकप्रिय हुईं, गूगल जैसे प्लेटफॉर्म उभरे। डेटा साझाकरण आम हुआ। नयी शताब्दी के शुरुआती दस बरस (2000-2010) मोबाइल और क्लाउड युग कहे जाते हैं। इस कालखंड में स्मार्टफोन क्रांति हुई, एपल और एंड्रॉयड ने जैसे हमारी ज़िंदगी ही बदल दी। सोशल मीडिया और ब्रॉडबैंड भी इसी दौर में हमारे जीवन में आए। और इसके बाद का समय (2010-अब तक) कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समय है। 5 जी, उन्नत नेटवर्किंग, इंटरनेटऑफ थिंग्स, स्मार्ट डिवाइस ये सब हमारे जीवन में शामिल हो चुके हैं। सारी दुनिया में यह सब हो रहा था तो भारत भी इससे प्रभावित हो रहा था। 1990 के दशक में हमारे सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग ने सॉफ्ट्वेयर निर्माण और बीपीओ सेवाओं में अपनी जगह बनाई, 2000 तक आते-आते इंटरनेट और मोबाइल फ़ोन का अधिक उपयोग होने लगा और 2010 के बाद जिओ की क्रांति, स्टार्टअप ईकोसिस्टम, डिजिटल इण्डिया की पहल वगैरह ने भारत को भी अन्य उन्नत देशों के समकक्ष खड़ा कर दिया।

ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस साल अर्थात 2025 तक आते-आते भारत में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या लगभग 90 करोड़ है। बेशक यह संख्या बहुत बड़ी और गर्वित करने वाली है। लेकिन इसी के साथ यह भी देखा जाना चाहिए कि ये 90 करोड़ लोग अधिकांशतः शहरी क्षेत्रों के निवासी हैं। ग्रामीण भारत की केवल 35-40 प्रतिशत आबादी के पास विश्वसनीय इंटरनेट पहुंच पा रहा है। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में 24 घण्टे बिजली की आपूर्ति अभी भी एक सपना है और 4जी 5जी की उपलब्धता सीमित है। ब्रॉडबैंड भी बहुत कम सुलभ है। उदयपुर से मात्र 25-30 किलोमीटर दूर रहने वाले अपने एक सहपाठी से मोबाइल पर ही ठीक से मेरी बात नहीं हो पाती है और जब मैं उससे कहता हूं कि तुम सोशल मीडिया वगैरह का इस्तेमाल क्यों नहीं करते, तो उसका जवाब होता है – इंटरनेट हो तो इनका इस्तेमाल करूं। तो इस तरह मैं पाता हूं कि जहां तक सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल सुविधाओं का सवाल है, भारत स्पष्टतः दो हिस्सों में बंटा हुआ है : एक वह जिसके पास है, और दूसरा वह जिसके पास नहीं है। अब यह जो नहीं वाला समूह है, इसकी बहुत सारी दिक्कतें हैं। इनके आर्थिक साधन सीमित हैं इसलिए इनके लिए स्मार्ट फ़ोन और किसी भी तरह का कंप्यूटर खरीदना सहज नहीं है। बहुत बार तो होता यह है कि पूरे परिवार के पास एक ही स्मार्ट फ़ोन होता है (अगर होता है) और इधर कोविड के बाद से उसकी उपादेयता पढ़ने वाले बच्चों के लिए बढ़ गई है तो परिवार के शेष लोगों को उसकी सुविधाओं से वंचित ही रहना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में और वहां भी वंचित वर्ग के लोगों और महिलाओं तक शिक्षा का उजाला पूरी तरह नहीं पहुंच पाया है। महिलाओं और बुज़ुर्गों में अन्यों की अपेक्षा डिजिटल साक्षरता कम है और कुल मिलाकर ग्रामीण जन विभिन्न ऑनलाइन प्लेट्फॉर्म्स, एप्स और इससे आगे सायबर सुरक्षा के बारे में बहुत कम जानकारी रखते हैं। हमारे समाज के बहुसंख्यक अंश के लिए डिजिटल साक्षरता के प्रसार में एक बड़ी बाधा भाषा की भी है। क्योंकि अधिकांश डिजिटल सामठाी अंग्रेज़ी में है, यह समूह उसका लाभ नहीं ले पाता है। इधर बेशक हिंदी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं में ये सुविधाएं सुलभ होने लगी हैं, इस बात को भी स्वीकार करने में झिझक नहीं होनी चाहिए कि इन माध्यमों पर अंग्रेज़ी की तुलना में हिंदी का प्रयोग थोड़ा कठिन है।

इस बात को समझा जाना आवश्यक है कि यह डिजिटल डिवाइड भारत की सर्वतोमुखी प्रगति में बड़ी बाधा है। इसके कारण शिक्षा, रोज़गार और आर्थिक एवं सामाजिक समानता प्रतिकूलतः प्रभावित हो रहे हैं। यही आशा की जा सकती है कि हमारी सरकार और निजी क्षेत्र एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हुए इस स्थिति को बदलने का प्रयास करेंगे।

भारत की जनसंख्या का यह जो बड़ा हिस्सा डिजिटल सुविधाओं से वंचित है, इसकी ज़िंदगी अनेक प्रकार से प्रतिकूलतः प्रभावित हो रही है। जो युवा हैं उनकी नौकरी के अवसर सीमित हो रहे हैं। यह कोई अलग से कहने की बात नहीं है कि वर्तमान समय में जो डिजिटल निरक्षर हैं उनके लिए नौकरी के अवसर लगभग नगण्य हैं। अगर कोई नौकरी का आकांक्षी नहीं है तो भी वह डिजिटल बैंकिंग जैसी सेवाओं का लाभ नहीं ले पा रहा है। किसी को अगर सामाजिक रूप से सक्रिय रहना है तो वह विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की सुविधाओं का लाभ नहीं ले पा रहा है और इस तरह समाज से अलग-थलग पड़ रहा है। अगर इस समूह का एक छोटा-सा हिस्सा किसी तरह डिजिटल सुविधाओं का लाभ ले भी रहा है तो वह डेटा चोरी और ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार हो कर जितना पा सक रहा है उससे ज्यादा खो रहा है।

इस निराश करने वाले परिदृश्य में यह जानना थोड़ी राहत देता है कि भारत सरकार और निजी क्षेत्र दोनों ही इस स्थिति को बदलने के लिए प्रयत्नरत हैं। भारत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल जुड़ाव बढ़ाने के लिए डिजिटल इंडिया योजना चला रखी है, ग्रामीण जन को डिजिटल साक्षरता देने के लिए प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान चलाया जा रहा है, नई शिक्षा योजना, 2020 के अंतर्गत क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल साक्षरता बढ़ाने के अनेक प्रयास हो रहे हैं। इसी तरह विभिन्न टेलीकॉम सेवा प्रदाता सस्ते डेटा प्लान देकर और 4 जी-5 जी नेट्वर्क का विस्तार कर स्थिति को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे है। अनेक ग़ैर सरकारी संगठन व समाज सेवी संस्थाएं भी अपने-अपने स्तर पर अनेक कार्य करके स्थिति को बेहतर बनाने के प्रयासों में जुटे हुए हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के विस्तार पर अधिक ध्यान देगी, वहां बिजली की आपूर्ति की स्थित सुधारेगी और ब्रॉडबैंड नेटवर्क का विस्तार करेगी। इसी के साथ विद्यालयों में डिजिटल साक्षरता पर अधिक बल दिया जाएगा और निजी क्षेत्र को प्रेरित किया जाएगा कि वह कम कीमत वाले स्मार्ट फोन और लैपटॉप बाज़ार में लाए और वित्तीय संस्थाएं इनकी खरीद के लिए आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराए।

इस बात को समझा जाना आवश्यक है कि यह डिजिटल डिवाइड भारत की सर्वतोमुखी प्रगति में बड़ी बाधा है। इसके कारण शिक्षा, रोज़गार और आर्थिक एवं सामाजिक समानता प्रतिकूलतः प्रभावित हो रहे हैं। यही आशा की जा सकती है कि हमारी सरकार और निजी क्षेत्र एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हुए इस स्थिति को बदलने का प्रयास करेंगे।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

फड़ चित्रकला: राजस्थान की चलायमान कथा और सांस्कृतिक आत्मा

अविनाश जोशी

भारत की सांस्कृतिक विविधता विश्व में अद्वितीय है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट लोक परंपराएँ, कलाएं और लोककथाएँ हैं, जो न केवल वहां के समाज को परिभाषित करती हैं, बल्कि पूरे राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को भी समृद्ध करती हैं। जब हम राजस्थान की बात करते हैं, तो एक रंगीन, राजसी और जीवंत लोकसंस्कृति का दृश्य आँखों के सामने उभर आता है। इसी सांस्कृतिक परंपरा की एक विलक्षण धरोहर है फड चित्रकला, जो चित्रकला, कथा, संगीत और श्रद्धा का ऐसा संगम है, जैसा विश्व की बहुत कम कलाओं में देखने को मिलता है।

'फड़' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – कपड़े का एक लंबा टुकड़ा। परंतु फड केवल एक चित्रित वस्त्र भर नहीं है, यह अपने आप में एक चलता-फिरता मंदिर है, जो जन-जन तक लोकदेवताओं की कथा, मर्यादा और संदेश को पहुँचाता है। इस फड को लोक कलाकार 'भोपा' और 'भोपियाँ' गांव-गांव लेकर घूमते हैं और दीपों की रोशनी में संगीत, गायन और नाटकीय शैली में कथा वाचन करते हैं। यह परंपरा केवल एक प्रस्तुति नहीं, बल्कि एक धार्मिक अनुष्ठान का रूप ले लेती है, जिसमें श्रोता सिर्फ दर्शक नहीं, बल्कि सहभागी बन जाते हैं।

ऐसा माना जाता है कि फड चित्रकला की परंपरा लगभग सात सौ से एक हजार वर्षों पुरानी है। प्रारंभ में इसका उपयोग भील समुदाय के पुजारी-गायक किया करते थे, जो लोकदेवताओं की गाथाएं लोगों को सुनाते थे। धीरे-धीरे यह परंपरा शाहपुरा और भीलवाड़ा क्षेत्र में विकसित हुई और चित्रकला के रूप में प्रतिष्ठित हुई। प्रारंभिक फड़ों में पाबूजी की कथा सबसे प्रमुख रही, जिन्हें पशुपालकों और ठाामीणों का रक्षक देवता माना जाता है। इसके अतिरिक्त देवनारायण, तेजाजी, गोगाजी जैसे अन्य लोकदेवताओं की गाथाएँ भी फड़ों का विषय बनीं।

फड चित्रकला एक आयताकार कपड़े पर बनाई जाती है, जिसकी लंबाई कई फीट तक हो सकती है। इसकी विशेषता यह है कि चित्र सपाट होते हैं, उनमें कोई परिप्रेक्ष्य या गहराई नहीं होती। मुख्य देवता को केंद्र में चित्रित किया जाता है, और उनके चारों ओर अनुक्रमित रूप में कथा के दृश्य, पात्र और घटनाएँ दर्शाई जाती हैं। परंपरागत रूप से प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता था, जो पौधों, पत्थरों और खनिजों से तैयार किए जाते थे। आजकल हालांकि रासायनिक रंगों का उपयोग भी होने लगा है। रंगों का चयन भी प्रतीकात्मक होता है – लाल ऊर्जा का, पीला पवित्रता का, हरा जीवन का और काला शक्ति का प्रतीक माना जाता है।

फड का निर्माण एक धार्मिक प्रक्रिया मानी जाती है। चित्र बनाने से पूर्व कलाकार उसकी पूजा करता है और चित्र पूर्ण होने के बाद प्राण-प्रतिष्ठा जैसा अनुष्ठान किया जाता है। भोपा इस फड को केवल विशेष धार्मिक अवसरों पर ही खोलता है, जिससे इसकी पवित्रता और महत्ता स्पष्ट होती है। फड केवल देखने की वस्तु नहीं है, बल्कि वह जीवंत होती है, एक कथा का माध्यम होती है, और कलाकार उसमें अपनी आत्मा उंडेलता है।

फड चित्रकला की परंपरा को जीवित रखने में दो समुदायों की विशेष भूमिका रही है शाहपुरा के छीपा समाज, जो इन चित्रों को बनाते हैं, और भोपा-भोपियाँ, जो इन्हें प्रस्तुत करते हैं। छीपा समाज को इस कला का मूल संवाहक माना जाता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी अपने परिवारों को यह कला सिखाता आया है। वहीं भोपा अपने रावणहत्था वाद्ययंत्र के साथ जब कथा गाता है, तो वह केवल गायन नहीं, अपितु अध्यात्म का अनुभव हो जाता है।

समय के साथ फड चित्रकला में विषयों का विस्तार हुआ है। यह केवल धार्मिक गाथाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि आज इसने पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, महामारी जैसे समकालीन विषयों को भी अपनी अभिव्यक्ति में शामिल कर लिया है। अब यह चित्रकला कैनवस, दीवारों, परिधानों और सजावटी वस्तुओं तक पहुँच चुकी है। जयपुर, शाहपुरा और भीलवाड़ा जैसे क्षेत्रों में अब फड चित्रों का व्यावसायिक उत्पादन और प्रशिक्षण शुरू हो चुका है।

फड कलाकार आज अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी भाग लेने लगे हैं। डिजिटल प्लेटफार्मों, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्रदर्शनियों के माध्यम से यह कला वैश्विक दर्शकों तक पहुँच रही है। कुछ कलाकारों ने पारंपरिक विषयों को समकालीन संवेदनाओं के साथ जोड़ने का सफल प्रयास किया है, जिससे यह परंपरा न केवल जीवित है, बल्कि वर्तमान से संवाद कर रही है।

हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी कम नहीं हैं। आज की युवा पीढ़ी में इस कला के प्रति रुचि में कमी देखी जा रही है। कलाकारों को उनके परिश्रम के अनुसार पारिश्रमिक और सम्मान नहीं मिल पाता। आधुनिक मनोरंजन के साधनों ने लोककलाओं को हाशिये पर डाल दिया है। यदि समय रहते संरक्षण और प्रचार के गंभीर प्रयास न किए गए, तो आने वाली पीढ़ियाँ इस अद्भुत कला से अनभिज्ञ रह जाएंगी।

फड चित्रकला को संरक्षित और पुनर्जीवित करने के प्रयासों में कुछ संस्थाएँ विशेष भूमिका निभा रही हैं। स्व. श्री लाल जोशी द्वारा स्थापित 'जोशी कला कुंज' ने इस कला को प्रशिक्षण और नवाचार के माध्यम से जीवित रखा है। उदयपुर स्थित भारतीय लोक कला मंडल ने फड चित्रों का संठाहण और प्रदर्शन कर पर्यटकों और शोधकर्ताओं को इस कला से परिचित कराया है। भारत सरकार और राजस्थान सरकार समय-समय पर फड कला पर आधारित डाक टिकट और विशेष आवरण जारी कर इसके महत्व को रेखांकित करती रही हैं।

आज आवश्यकता है कि इस कला को केवल संठाहालयों और प्रदर्शनी हॉलों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे जनजीवन से जोड़ा जाए। यदि फड चित्रकला को शिक्षा, पर्यटन, डिजिटल मीडिया और सार्वजनिक कला परियोजनाओं से जोड़ा जाए, तो यह एक जीवंत परंपरा बन सकती है, जो न केवल अतीत से जुड़ी है, बल्कि वर्तमान और भविष्य से भी संवाद करती है।

फड चित्रकला राजस्थान की सांस्कृतिक आत्मा की अद्वितीय अभिव्यक्ति है। यह केवल चित्रांकन की शैली नहीं, बल्कि कथा, संगीत और आस्था का समवेत रूप है। इसे जीवित रखना केवल कलाकारों या सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हम सभी का सांस्कृतिक कर्तव्य है। यदि इसे उचित संरक्षण, प्रचार और सम्मान मिला, तो यह परंपरा आने वाले समय में न केवल जीवित रहेगी, बल्कि और भी अधिक समृद्ध और प्रभावशाली बनकर उभरेगी।

–अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

जल विहार में बिराजे प्रभु

राजसमंद। जिला मुख्यालय स्थित श्री पुष्टिमार्गीय तृतीय पीठ प्रन्यास के श्री द्वारकाधीश मंदिर में रविवार को विशेष श्रृंगार और उत्सव का आयोजन किया गया। प्रातःकाल श्रृंगार दर्शन में श्री प्रभु को मस्तक पर केसरी छज्जेदार पाग, जिस पर मोती का सेहरा, केसरी बडौ पिछोडा और केसरी अंतर्वास का पटका एवं मोती के आभरण और वनमाला का श्रृंगार धराया गया। जिसके बाद राजभोग के दर्शन में राजभोग में प्रभु को फूलों का श्रृंगार अंगीकार कराया गया और प्रभु को चंदन के बंगले में विराजित किया गया।

राजभोग दर्शन में गुजराती वैष्णवों का जनसैलाब उमड पडा। वहीं शयन के दर्शन में प्रभु जल विहार करते हुए चंदन की बडी सांगामाची पर बिराजे। शाम को उत्थापन दर्शन से पहले रतन चौक में यमुनाजी की भावना कर जल भरा गया। इस जल में लकडी के खिलौने जैसे- मगरमच्छ, मछली, बतखें, हंसों का जोडा, कछुआ प्रवाहित किए गए। यमुनाजी में गुलाब के फूल, खस-खस, मोगरा और शीतल देने वाले इत्र भी पधराए गए, जिससे वातावरण सुगंधित और शांत हो गया। वहीं प्रभु को मोगरा की कलियों और फूलों का विशेष श्रृंगार अंगीकार कराया गया। शयन के जल विहार दर्शन का लाभ स्थानीय और बाहर से पधारे भक्तों ने भरपूर आनंद के साथ लिया।

"एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य" की थीम पर मनाया जायेगा योग दिवस

बून्दी। 11 वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य की थीम पर 21 जून को पूरे विश्व में उत्साह के साथ मनाया जायेगा। बूंदी में सभी ग्राम पंचायत मुख्यालयों,ब्लाक मुख्यालयों - जिला मुख्यालय पर 21 जून को योग

■ योग दिवस आयोजन को लेकर क्रियान्वयन समिति की बैठक आज

प्रोटोकॉल के अनुसार सामूहिक योगाभ्यास कराया जायेगा। अधिकारी आयुर्वेद उपनिदेशक डॉ. मालती पारीक ने बताया कि बूंदी जिले में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आयोजन के लिए सोमवार 26 मई को दोपहर 12 बजे जिला कलेक्ट्रेट सभागार में जिला कलेक्टर अक्षय गोदारा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय क्रियान्वयन समिति की बैठक का आयोजन होगा, जिसमें सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी, योग व सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी शामिल होंगे। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आयोजन में आमजन की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने और नियमित योगाभ्यास द्वारा लोगों को स्वस्थ रखने के लिए खेल संकुल में 30 दिवसीय काउंटडाउन शिविर आयोजित किया जा रहा है। योग फोर निरोगी बूंदी स्वास्थ्य महाभियान के समन्वयक डॉ. सुनील कुशवाह ने बताया कि 20 जून तक निरंतर चलने वाले इस काउंटडाउन शिविर में योग चिकित्सकों के निर्देशन में योग प्रशिक्षकों द्वारा प्रातः 6 बजे से 8 बजे योग प्रोटोकॉल का योगाभ्यास कराया जा रहा है, जिसमें बडी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं।इस शिविर में डॉ सुनील कुशवाह, योग - प्राकृतिक चिकित्सा अधिकारी डॉ विमला परमार, योग प्रशिक्षक दीपक गुर्जर, भूपेन्द्र योगी, चांदनी वरयानी, शक्ति तोषनीवाल, शिखर पंचौली, सरला कुशवाह, पूजा खत्री, प्रांशु सिंह गहलोत, मनीष गुर्जर, नीरज गुर्जर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

11 वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य की थीम पर 21 जून को मनाया जायेगा। जिसकी बूंदी में तैयारियां शुरु कर दी है।

सभापति की मौजूदगी में भाजपा पदाधिकारियों ने सुनी मोदी के मन की बात

करौली। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश निर्देशानुसार करौली शहर मंडल अध्यक्ष आशुतोष तिवारी के नेतृत्व में शहर मंडल के सभी शक्ति केंद्रो पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के मन की बात कार्यक्रम को सभी शक्ति केंद्रों पर देखा और सुना गया।

बूथ नंबर 132 के बूथ अध्यक्ष आशुतोष जैन के नेतृत्व में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम के 122 वे संस्करण को देखा और सुना गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि करौली नगर परिषद की सभापति डॉ. राजरानी शर्मा एवं सुशील शर्मा रहे। इस दौरान शहर मंडल महामंत्री आशीष जैन,जिला सोशल मीडिया प्रभारी बृजेश गुरु,उपाध्यक्ष विक्की गुरु, कोषाध्यक्ष कपिल जिंदल, अमिता चतुर्वेदी, सीमा नामा, नंदिनी नामा आदि भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

करौली शहर मंडल अध्यक्ष आशुतोष तिवारी के नेतृत्व में भाजपा पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने सुनी मोदी के मन की बात।

इसी क्रम में बूथ संख्या 111 कपिल देव पाराशर के नेतृत्व में कार्यक्रम सुना।

■ बूथ संख्या 123 पर मंडल नितेश महावर के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सुना

बूथ संख्या 123 पर मंडल नितेश महावर के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सुना और देखा। बूथ संख्या 153 पर मंडल उपाध्यक्ष धन सिंह चैहान के नेतृत्व में मुकेश माली, जितेंद्र सैनी आदि कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम सुना। बूथ संख्या 140 पर मुकेश कुशवाहा के नेतृत्व में कार्यक्रम को सुना।बूथ संख्या 148 मंडल महामंत्री तेजेंद्र सिंह जादौन के नेतृत्व में कार्यक्रम को सुना और देखा।

वृद्धाश्रम में छात्राओं ने श्रमदान किया

भरतपुर (निस)। सेठ हजारी लाल मंहगाया सेवा संस्थान आनन्दधाम वृद्धाश्रम मथुरा रोड भरतपुर पर प्रीतम कौर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय किला भरतपुर द्वारा आनन्द धाम वृद्धाश्रम में छात्राओं ने श्रमदान किया। यह कार्य छात्राओं ने अपने ग्रीष्मकालीन अवकाश समाज सेवा शिविर की गतिविधियों के अंतर्गत किया। यह शिविर राजस्थान सरकार द्वारा सभी सरकारी विद्यालयों में अनिवार्य रूप से चलाया जाता है जिसमें विद्यार्थियों द्वारा समाज सेवा के बारे में जानकारी दी जाती है। आश्रम में आकार छात्राओं ने आश्रम की साफ सफाई की व वृद्धजनों के साथ बैठकर वृद्धों से उनके अनुभवों से ज्ञान प्राप्त किया व वृद्धों को फल, मिठाई का वितरण किया। इस अवसर पर मंजूलता व्याख्याता, भगवती, अलीषा, अमरीक, बुलबुल, चाहत, चावला, मीनाक्षी, मुस्कान, नंदनी, करिश्मा, हर्शिता, प्रीति आदि मौजूद रही।

राशिफल

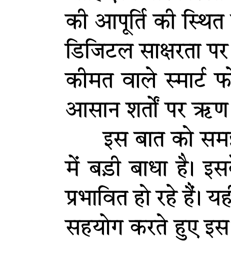
पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 26 मई, 2025

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, भरणी नक्षत्र प्रातः 8:24 तक, शोभन योग प्रातः 7:02 तक, शकुनि करण दिन 12:12 तक, चन्द्रमा आज दिन 1:41 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज पितृकार्य अमावस्या, बड़ पूजन अमावस्या, शनि जयन्ती, फल हारिणी कलिका पूजन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:20 तक, शुभ 9:01 से 10:42 तक, चर 2:05 से 3:46 तक, लाभ अमृत 3:46 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:09

मेष
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। आज व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनः स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
अपने अति आवश्यक कार्यों को दिन के मध्यान्ह पूर्व से करने का प्रयास करें। आर्थिक मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात धन हानि का भय है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। यात्रा में दुर्घटना का भय है। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह व्यावसायिक मामलों में परेशानी हो सकती है।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। दिन के मध्यान्ह पश्चात शुभ संदेश प्राप्त होंगे।